जैनधर्मका महत्त्व ।

(प्रथम भाग)

जैनमित्रके बारहवें वर्षका उपहार।

ॐ

श्रीवीतरागाय नमः।

जैनधर्मका महत्त्व।

अर्थात्

जैनधर्मसम्बन्धी महत्त्वपूर्ण लेखोंका संग्रह।
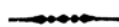
(प्रथम भाग)

हरदानिवासी बाबू सूरजमलजी सहायक
सम्पादक 'जैनमित्र' द्वारा सम्पादित

और
जैनमित्रकार्यालय बम्बई द्वारा
मम्बईवैभव स्टीम प्रेसमें मुद्रित।

प्रथमावृत्ति] श्रीवीर नि० संवत् २४३७ [मूल्य ।।।)

ईस्वी सन् १९११

श्रीवीतरागायनमः ।

जैनधर्मका महत्व

अर्थात्

जैनधर्मसम्बंधी महत्वपूर्ण लेखोंका संग्रह ।

(१)

महावीर स्वामीका पवित्र जीवन ।

" गये दोनों जहां नजरसे गुजर
तेरे हुस्नका कोई बशर न मिला "

हिन्दुओंमें ऐसे लोग कम नजर आएंगे जो महावीर स्वामीके पाक और मुकद्दस नामसे वाकिफ होंगे । ये जैनियोंके आचार्य्य । गुरु थे; पाकदिल, पाकख्याल, मुजास्सिमपाकी व पाकीज़गी थे । ये किसी और देशके नहीं थे, न क़िसी और कौमसे थे, हमारे

१. श्रीयुत महात्मा शिवव्रतलालजी बर्म्मन् एम्. ए. द्वारा सम्पादित-साधु मासिकपत्र जनवुरी सन् १९११ से उद्धृत । २ रूपका । ३. आदमी। ४. पाक, पवित्र । ५. जानकार। ६. बिलकुल सरसे पैर तक।

कौमी बजुर्ग थे। हमारे ही नेशन (वर्ण) से थे और हम इनके नामपर, इनके कामपर और इनकी बेनजीरे[2] नफ्सकुशी[3] व रियाजतोंकी[4] मिसालपर जिस कदर नाजें[5] करें बजा है।

हिन्दुओ! अपने बजुर्गोंकी इज्जत करना सीखो, मजहबी इख्तलाफातोंकी[6] वजहसे उनकी शानमें भूलकर भी कल्मे[7] नाजेबा इस्तेमाल न करो। जैनी हमसे जुदा नहीं हैं। हमारे ही गोश्त व पोश्त[8] हैं। हमारे ही हमखयाल हैं, हमारी ही कौमके इफरातें[9] हैं। उन नादानोंकी बातोंको न सुनो, जो गलतीसे, गुमराहीसे[10], नादानी और तास्सुबें[11] से कहते रहते हैं कि "हाथीके पांवके तले दब जाओ, मगर जैनमंदिरमें घुसकर अपनी हिफाजतें[12] न करो।" इस तास्सुबका कहीं ठिकाना है? इस तंगदिलीकी कोई हद भी है? आखिर इनसे तास्सुब क्यों किया जाय? हिंदूधर्म, वसी[13] ख्यालात व फराखदिलीकी[14] तरी[15] है, वह तंगदिली या तास्सुबका हामी[16] नहीं है और फिर तास्सुब किससे? ये तो अपने ही हैं। क्या हुआ अगर इनके किसी ख्याल तुमको मुवाफकत नहीं हैं? न सही, कौन सब बातोंमें सबसे मिलता है? तुम उनके गुणोंको देखो, उनकी पाकीजह[17] सूरतोंका दर्शन करो, उनके भावोंका प्यारकी निगाहसे नज्जारे[18] देखो। ये धर्म कर्मकी झलकती

---

१. बड़े। २. असाधारण, जिसकी कोई मिसाल न हो। ३. इंद्रियदमन। ४. तपकी। ५. अभिमान। ६. भिन्नता। ७. अशोभित वाक्य। ८. खाल। ९. टुकड़े। १०. अज्ञानसे। ११. पक्षपातसे। १२. रक्षा। १३. बड़े। १४. विस्तारित चित्त। १५. रास्ता। १६. मददगार, सहायक। १७. पवित्र। १८ दृश्य।

हुई नूरानी[1] मूर्ते हैं। किसीके कहने सुनने पर न जाओ। जो जैसा हो उसको वैसा ही देखो, जो जैसा कहता है उसको वैसा ही सुनो, उनके दिलमें घुसकर अपनी जगह बना लो। उनका दिल विशाल था, वह एक बेपायां[2] कनार समंदर था जिसमें इनसानी हमदर्दी[3]की लहरें जोर शोरसे उठती रहती थीं और सिर्फ इनसान ही क्यों? उन्होंने संसारके प्राणी मात्रकी भलाईके लिए सबका त्याग किया; जानदारोंकी खूनरेजी[4] रोकनेके लिए अपनी हस्तीका खून कर दिया। ये अहिंसाकी परम ज्योतिवाली मूर्तियां हैं, वेदोंकी श्रुति "**अहिंसा परमो धर्मः**" कुछ इन्हीं पाक बजुर्गोंकीजिंदगी[5]में अमली सूरत अख्तयार करती हुई नजर आती है। ये दुनियांके जबरदस्त रिफार्मर जबरदस्त मोहसिन[6] और बड़े ऊंचे दर्जेके वाइज[7] और प्रचारक गुजरे हैं, ये हमारी कौमी तवारीखके कीमती रत्न हैं। तुम कहां और किनमें धर्मात्मा प्राणियोंकी तलाश करते हो? इनको देखो, इनसे बेहतर साहब कमाल तुमको कहां मिलेंगे? इनमें त्याग था, इनमें वैराग्य था, इनमें धर्मका कमाल था, ये इनसानी कमजोरीसे बहुत ऊंचे थे, इनका खिताब '**जिन**' है, जिन्होंने मोह मायाको और मन और कायाको जीत लिया था। ये तीर्थंकर हैं, ये परमहंस हैं, इनमें तसन्नो[8] नहीं था। बनावट नहीं थी, जो बात थी साफ २ थी। ये वह लासानी[9] शखसीयतें हो गुजरी

---

१. चमकती दमकती। २. जिसका किनारह न मालूम हो अर्थात् अथाह समुद्र। ३. मनुष्यप्रेम ४. खून बहाना। ५. जिंदगीका। ६. उपकारी। ७. वक्ता। ८. बनावट, दिखाव। ९. जिसकी मिसाल न हो, असाधारण।

हैं, जिनके जिस्मानी[1] कमजोरियों व ऐबोंके छिपानेके लिये किसी जाहरी पोशिशकी जरूरत लाहक नहीं हुई। क्योंकि उन्होंने तप करके, जप करके, योगका साधन करके आपने आपको मुकम्मिल बना लिया था। तुम कहते हो कि, ये नग्न रहते थे, इसमें ऐब क्या है? परम अंतार्निष्ठ, परम ज्ञानी, कुदरतके सच्चे पुत्र, इनको पोशिशकी जरूरत कब थी?

सुनो, एक मरतबह मुसल्मानोंका **सरमद** नामी फकीर देहलीके गली कूचोंमें ब्रहना मादरजाद होकर घूम रहा था। औरंगजेब बादशाहने देखा, तनपोशिके लिए कपड़े भेजे, फकीर मजजून[7] और वली था, कहकहा मारकर हंसा, कलम दावात कागज पास था, एक रुबाई लिखी और बादशाहके खिलअतको[10] यों ही वापिस कर दिया। रुबाई यह थी:--

> **आँकस कि तुरा कुलाह सुल्तानी दाद।**
> **मारा हम ओ अस्बाब परेशानी दाद॥**
> **पोशानीद लबास हरकरा ऐबे दीद।**
> **बे ऐबा रा लबवास अयानी दाद।**

ये लाख रुपयेका कलाम है और वह इन जैनी महात्माओंकी पाक

---

१. शारीरिक। २. मालूम। ३. पूरा, पूर्ण। ४. प्रकृति, नेचर। ५. कपड़ा। ६. नंगा। ७. अपनी ही आत्मामें लीन, निजानंद अवस्थामें। ८ खिलखिलाकर ९. शैर (छंद) १०. कीमती कपड़ेको ११. जिसने तुमको बादशाही ताज दिया, उसीने हमको परेशानीका सामान दिया। जिस किसीमें कोई ऐब पाया, उसको लिबास पहिनाया और जिनमें ऐब न पाए उनको नंगेपनका लिबास दिया।

जिंदगीके इस्बे हाल है। फकीरोंकी उरयानी[२] देखकर तुम क्यों नाक भौं सकोड़ते हो? उनके भावोंको क्यों नहीं देखते? सिद्धांत यह है कि, आत्माको शारीरिक बंधनसे और ताअलुकातके पोशिशसे आजाद करके बिलकुल नंगा कर लिया जाय ताकि इसका निज रूप देखनेमें आवे। ये आत्मज्ञानी थे आत्माका साक्षात्कार कर चुके थे। यह वजह है कि जाहिरदारीके रस्मोरिवाजसे परे रहते थे। यह ऐबकी बात क्या है? तुम्हारे लिए ऐब हो, इनके लिये वह तारीफकी बात थी, बस इतनी ही बातपर तुम नफरत करते हो और हकीकत को नहीं समझते, तुमको क्या कहा जाय? तुम ईश्वरकुटीमें रहनेवालोंको अपने ऐसा आदमी समझते हो, यह तुम्हारी गलती है या नहीं?

महावीर स्वामी जैनियोंके आखरी व चौवीसवें तीर्थंकर थे। कौमके राजपूत क्षत्रिय, इक्ष्वाकुवंशके भूषण, रघुकुलके रत्न, इनका जहूरे पार्श्वनाथसे ढाई सौ वर्ष बाद हुआ था। पैदाइशकी जगह क्षत्रीघंट बताई जाती है जिसका राजा सिद्धार्थ था। ये उसकि लड़के थे। माका नाम त्रिशला था और मुबारिक थे वे माबाप, जिनके घरमें यह गोहर बेबहा पैदा हुआ था। ये अपने मा-बापके इकलोते बेटे नहीं थे, मगर तख्त व ताजके वारिस होनेकी काबलीयत रखते थे। इनके पैदा होनेसे शाही खानदानको जो खुशी हुई, वह बयानसे बाहर है। भारतवर्षका पवनखंड जहां सिद्धार्थकी हकूमत थी इस नौनिहालके पैदा होनेसे चमन २ हो गया। बापने खुश

---

१. अनुसार २. नंगापन. ३ घृणा. ४ असलीयत. ५ प्रगटना. ६ रत्न, मोती–बहुमूल्य।

होकर इनका नाम वर्द्धमान रक्खा, मगर दुनियांकी मजहबी तवारीखमें ये महावीरस्वामीके नामसे ज्यादहतर मशहूर हैं। जिस्म तनुमंद, हाथीके ऐसा बल, बैलके ऐसे कंधे, बदनके खूबसूरत, उजुंके सुडौल थे। जिस्म क्या था, नूरके सांचेमें ढली हुई मूर्ति थी। आलिम, फाजिल, तीरअंदाजं, खंजेरकश, सिपाहगरीके फनमें लासानी, शेहसवारी, हुनरमें फर्द व एकताए रोजगार, अखाड़ेमें कभी किसीने इनके पीठ नहीं लगाई, पहलवानोंमें पहलवान्, महावीरस्वामी हरतरहसे दुनियाँमें मुकम्मिल बनकर आये थे। इनकी एक बहिन थी जिसका नाम सुदर्शना था, एक बडा भाई नन्दिवर्धन और एक छोटा भाई भी था जो सुपार्श्व कहलाता था। ऐसे नाम आर्यवंशके कदीमं नामोंमेंसे हैं जैसे रोहताश्व वगैरह और इसी तरहके नाम पाहिले पारसियोंमें भी होते थे जैसे गुश्तास्य, लहरास्य, तहमास्य वगैरह २, जिससे जाहिर है कि ईरानी और आर्य करीब २ एक ही असल नसलसे हैं।

महावीरस्वामी संस्कृत और प्राकृतके आलिमं थे। बापने चाहा कि इनको राजकाजके काबिल बनाया जावे मगर कुदरतने इनको धर्मराज बनाकर भेजा था। ये सिद्धार्थके राजके वारिस होकर

---

१. ताकतवर। २. अंगके। ३. तीर चलानेवाले ४. तलवार चलानेवाले। ५. जमानेमें एक; जिनकीसमान कोई दूसरा उस समय न हो। ६. नोट—महावीर स्वामी अपने पिताके इकलौते बेटे थे और वे बालब्रह्मचारि रहे। लेखक महाशयने जो उनके भाई बहिनों तथा स्त्री व पुत्रीका होना लिखा है शायद वह श्वेताम्बर ग्रंथोंके आधारपर लिखा है। दिगम्बर ग्रन्थोंमें इनका वंश भी इक्ष्वाकु नहीं किन्तु नाथ लिखा है। जन्मका नगर कुंडनपुर था। ७ प्राचीन। ८ विद्वान्।

नहीं आये थे बल्कि ऋषभदेवके धर्मदेशके राजा होनेके लिये जरूर किया था। इफ्तदाहीसे[1] चित्तमें तीव्र वैराग्य था, साधुओंकी संगतिसे खुश होते थे, योग और ज्ञानके मसाइलकी[2] गुत्थी खूब सुलझाते थे। राजाको खौफ हुआ कि कहीं इनको धर्मकी हवा न लग जाय। बंदिशें करना शुरू की, शादी कर दी गई। बीबीका नाम **यशोदा** था। इसके बुत्नसे[3] एक लड़की भी पैदा हुई जो **अनुजरचा** और **प्रियदर्शना**के नामसे मशहूर है, जिसका विवाह महावीरस्वामीने अपने एक शागिर्दके[4] साथ कर दिया था जिससे जाहिर है कि, वे किस हद तक रस्मी व जाहिरी बातोंके बरखिलाफ थे। इस **प्रियदर्शना**के पेटसे जो औलाद हुई वह भी लड़की ही थी जिसका नाम माताने **शीशवती** ख्वाह **यशोवती** रक्खा।

महावीरस्वामी वली मादरजाद थे। दिलके नरम, दयावंत, धर्म और क्षमा मिजाजमें कूट २ कर भरी थी। जब अठ्ठाईस वर्षके हुए, संसारसे चित्त उदास हो गया। बड़ा भाई चाहता था कि राज इनको दिया जावे क्योंकि ये हरदिलेअजीज[5] थे, उसने वैराग्य होनेपर भी दो वर्षतक उनको मजबूर करके अपने साथ रक्खा, दुनियाँके नशेब[6] व फराज समझाता रहा मगर पत्थरके जोंक नहीं लगती। उसकी नसीहतोंका दिलपर कुछ असर नहीं हुआ।

जाके गुरुने रँग दिया, कबहुँ न होय कुरंग।
दिन दिन बानी ऊजली, बढ़े सवाया रंग॥

---

१. शुरूसे। २. तत्त्वकी। ३. पेटसे। ४. शिष्यके। ५ सर्व प्रिय। ६. ऊंच नीच।

बड़े भाईने कहा:—"वर्धमान! क्षत्रियका धर्म राज करनेका है, सबको बसमें लाओ, राजको बढ़ाओ, ताकि हमारा घराना दुनियांमें नेकनाम बने।" ये हंसे "भाई! राज नाम है सबको काबूमें लाना, तुम देशका राज करो, मैं और तरहका राज करूंगा, तुम दुश्मनोंसे मुल्कको साफ करो, मैं काम क्रोध शत्रुओंको मारकर शांतिका नाद बजाऊंगा, तुम तख्तपर बैठो, मेरा तख्त संसारके प्राणियोंका दिल होगा, तुम भारतवर्षका राज भोगो, मैं 'जिन' होकर सारे जगतको अपना वशीभूत कर लूंगा, तुम अखंड राज करो, मैं प्राणियोंको दुःखोंसे नजात[1] देकर संसारको स्वर्गधाम बनाऊंगा। मेरा और तुम्हारा मुकाबला होगा और मैं देखूंगा किसको लाफानी[2] राज मिलता है।" भाई चुप हो गया, कलाममें[3] कुछ ऐसा मकनातीसी[4] असर था जिसका मुकाबला इससे न हो सका। माने समझाया, बापने समझाया, स्त्री रोने लगी, मगर उन्होंने एककी भी न सुनी। जब पूरे तीस वर्षके हुए, एक दिन यों ही घरसे उठ खड़े हुए।

न सुध'बुध' की ली और न 'मंगल' की की।
निकल घरसे बस राह जंगल की की॥

घरवाले दुखी हो गये, स्त्रीने दामन[5] पकड़ना चाहा, मा रोई, बाप रोया, भाई बहिनने मुहब्बतके आंसू बहाए, मगर फकीरने किसीकी न सुनी।

---

१. छुटकारा। २. नाश न होनेवाला। ३. वाक्य वचन। ४. आकर्षण शक्ति। ५ कपड़ा, पल्ला।

हुआ इश्क[1] खुदाका ख्याल मुझे,
तो न दिलमें किसीका खयाल रहा।
नहीं ऐशो खुशीकी मुझे परवा,
नहीं नामको फिकर मलाल[2] रहा।

जो कुछ करना है कर गुजरो, जिंदगी रोज २ नहीं मिलती। दिलके जजबात अगर सचाईकी तरफ तवज्जह करते हैं तो उनको मत दबाओ, खुलने दो, हर जिंदगी अपना खास मिशन लेकर आती है, पसोपेशकी[3] आदत बुरी होती है, एक सर हजार सौदाका ख्याल बुरा है।

जन्म मरण दुख याद कर, कोड़े काम निवार।
जिन २ पंथों चालना, सोई पंथ संवार॥ १॥

घरसे निकले, संन्यास धारण किया, सुनसान जंगलमें बैठकर दो वर्षतक एकलख्त[4] रियाजत की, जिनके सुननेसे रोंगटे खड़े होते हैं। खाना पीना हराम होगया, किसी जबरदस्त व्रतको धारण करनेकी सूझी थी, उसके लिये तप करना लाजमी था। क्योंकि तपही असलमें महान कामकी बुनयाद[5] होती है। तप करनेसे जजबात[6] एकसूँ और एक रुख होते हैं, लोग इस राजको कम जानते हैं, कामसे पहिले तप नहीं करते, इस वजेहसे वह काम मजबूत नहीं होता। पार्वतीको शिवजीसे विवाह करनेका ख्याल आया, शंकरका मिलना आसान काम नहीं था, लोगोंने राय दी, पहाडकी चट्टानपर बैठकर तप करो उसने ऐसा ही किया। शिवजीका ख्याल दिलमें पकाने लगी, ख्याल पहिले मुत्तहिदे और मुत्तफिक होकर एक मरकजपर

---

१. प्रेम। २ रंज। ३ आगा पीछा, सोच विचार। ४ एक साथ। ५ नीव। ६. मनकी तरंगें, भाव। ७. एक तरफ। ८. भेद। ९. इकट्ठा। १०. मुख्य स्थान।

कायम हुआ और उससे फिर कशिशकी धारें निकलने लगीं और उन्होंने शिवजीको पकडकर खेंच बुलाया और वह इस तरह पकडे हुए चले आए जैसे हाथी रस्सोंसे बंधा हुआ खिंच आता है। ब्रह्माण्डमें खलबली पड गई, कौन था जो पार्वतीके तपका मुकाबला करता, देवता ऋषि सब आजिज[1] हो गए, जबरदस्ती शिवको प्रेरणा करके बुला लिये, यह तपकी कशिशकी जबरदस्त तासीर थी जिन खूबसूरत लफजोंमें इस सतीको तपका उपदेश दियागया था, वह हमारे और तुम्हारे सोचनेके लायक है। गोस्वामीजी इसको इसतरह कलमबंद करते हैं,—

तपबल रचे प्रपंच विधाता, तपबल विष्णु सकल जगत्राता।
तपबल शम्भु करहिं संहारा, तपबल शेष धरहिं महिभारा।
तप अधार सब सृष्टि भवानी, करहु जाइ तप अस जिय जानी॥

पार्वतीने तप किया, ब्रह्माने वर दिया, सप्त ऋषि देखने आए! पार्बतीकी सूरत बयान करते हुए शाइर[2] इसतरह लिखता है;—

ऋषिन गौरि देखी तहँ कैसी, मूरतवंत तपस्या जैसी॥

तपसे बल व पराक्रम बढ़ता है, तप मिजाजमें साबितकदमी[3] और जबरदस्त इस्तकलाल[4] पैदा कर देता है। इंसानका दिल अटल बन जाता है और इम्तहान व आजमाइशोंके[5] खतरातसे[6] हमेशहके लिए छुट्टी पाजाता है। ये तपका प्रताप है और इसी वजेहसे **महावीर स्वामीने** सख्तसे सख्त तप किये। जिसको तपकी गूढ़ फिलासफी समझनी हो, वह इस महान् जिनकी सुहावनीजिंदगीका मुताला[7] करे।

१. तंग। २. कवि। ३. दृढ़ता। ४. मजबूती। ५. परीक्षाके। ६. डरसे। ७. अवलोकन.।

बहुत दिनोंतक कुछ खाना नहीं खाया। नाकके आगेके हिस्से-पर निगाह जमाकर बैठे रहे। चुपचाप न किसीसे बोलना न चलना न जिस्मका ख्याल न तनका ख्याल, बारिसका मूसलाधार पानी बरस गया, सूरज उनपर अपनी कडी धूपका इम्तहान कर गया, ओस व पालाकी सख्ती और मौसमोंकी सरद महरीने खूब अच्छी तरह आजमा कर देख लिया, सूरज चाहे इधरसे उधर चला जाता, हिमालयकी जगह चाहे समंदर लहरें मारता, मगर इनमें जुंबिश[1] नहीं था। जब सब कुछ हो गया, ज्ञानकी प्राप्तिका वक्त आया एक यक्षने आकर दरख्वास्त की, "महाप्रभु! तप पूरा हुआ," अब देशको चिताइये और धर्मकी मर्यादा कायम कीजिए। ये उठे और कुछ दिनोंबाद राजगृहमें आये। एक गांवका रहनेवाला पंडित जो स्वभावका चंचल था, मिला. इनको फकीर समझकर बाचबीत करनेका शायक[2] हुआ। ये बोले, "तू धर्मकी तलाशमें चला है या अपनी बुद्धि दिखाना चाहता है?" इसने ताम्मुलके साथ कहा "मैं धर्मका जिज्ञासु हूं" महावीर स्वामीने जबाब दिया, "धर्म मुझमें है, मैं धर्मका रूप हूं, मेरी जिंदगी धर्मकी जिंदगी है. मुझको देख तुझको धर्मका दर्शन मिलेगा।" वह हैरान हुआ, मगर इन सीधी सीधी बातोंमें सचाई थी, दिलमें असर कर गई और वह उनका शागिर्द बन गया।

जा खोजत ब्रह्मा थके, नर मुनिदेवा।
कहैं कबीर सुन साधवा, कर सतगुरु सेवा॥

फिर ये दौरा करते हुए श्रावस्ती और वैशाली नगरीमें आये। वहां प्रचार करके बहुत आदमियोंको हकीकतका रास्ता दिखाया, फिर

१, हिलना चलना। २. इच्छुक। ३ धैर्य। ४. चकित।५. सत्यताका।

वे कुशाम्बी शहरमें वारिद[1] हुए। यहां श्रेणिक राजा राज करता था, इसको धर्मकी प्यास थी, वह उनका चेला[2] बना फिर और लोग मोतकिद[2] हुए फिर तो वह धर्मका सैलाव[3] फैला कि दुनियां तित्तर वित्तर हो गई। आचार्य्य कुछ थोड़ासा वक्त उपदेशके लिये देते थे, बाकी वक्त तपस्यामें सर्फ करते थे। उन्होंने पूरे बारह वर्षतक तपस्या की और अपनी जिंदगीसे लोगोंको दिखा दिया कि धर्म इस तरहका होता है। धर्म न पोथीमें है, न शास्त्रमें है, धर्म सिर्फ अमली जीवनमें है। अमली जीवन ही तिरता और तारता है। महावीर स्वामीमें सबसे बड़ी खूबी यह थी कि इन्होंने मजबूत अमली मिसाल कायम की। बात कम करते थे मगर जो कुछ कहते थे जची तुली कहते थे और वह अपना खासा असर रखती थी।

मगध देशमें वैदिक धर्मकी चर्चा थी। उन्होंने ब्राह्मणोंके साथ बारहों[4] शास्त्रार्थ किये और ब्राह्मणोंकी बडी तादाद[5] इनकी चेला हो गई। इनके खास शागिर्दोंमेंसे **इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति, वेकत, सौधर्म, मंडितपुत्र, मौरिदपुत्र, अंकपत, अचलव्रत, इमैत्रिय और प्रभास,** ज्यादह मुम्ताज[6] थे, इनमेंसे इन्द्रभूति और सौधर्म भगवान् महावीर स्वामीके निर्वाणपदमें जानेके बाद गुरुके धर्मका मुद्दत तक प्रचार करते रहे।

जैनियोंका ख्याल है कि गौतमबुद्ध*महावीर स्वामीके शागिर्द थे, यह ख्याल सही है या गलत मैं कुछ नहीं कह सकता। मगर यह

१.आये,पधारे। २.अनुगामी। ३बहाव। ४.कईबार।५. संख्या। ६. मान्य.

*बौद्धमतके प्रचारक गौतमबुद्ध दूसरे थे और महावीरस्वामीके मुख्य गणधर गौतम दूसरे थे। एक नामकी वजहसे भ्रम पड़ता है।